A

SATISAR

THE CULTURAL HERITAGE



Prajapati is called Ka, Kashyapa is also a Prajapati, Built by him, This place will be called "KASHMIR"

A Cultural Window of Satisar Foundation SAPTRISHI-5084 KASHMIRI PANDIT VISTHAPAN-19 VIKRAMI-2065





INVOCATION OF GODS

ऊँ ज्याय स्वन्तिष्वितिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सथराश्चरन्तः अन्यो अन्यस्मै वहग् वदन्त एत सधीची नान्वः सम्मनसंस्कृणेमि"

May the developed and prosperous nations and their individual members respect the sovereignty of other nations and on the other hand every individual may respect the senior member of the society. Every person should do nothing without fully considering the merits and demerits of his deeds. They should be industrious and should not pause till they accomplish their goal paying single minded attention to it. They should cultivate mutual friendship and may talk to each other with gentility and affection. They may impart

सरस्वती वन्दना

अनादिरूपां अजन्मरूपां, अचिन्त्यरूपाम वन्दे, वन्दे । ।। कन्ददशानां श्वेतवसनां गौरवर्णाम वन्दे, वन्दे देवीं ।३। सतस्वरूपां चितस्वरूपाम आनन्दरूपाम, वन्दे, वन्दे । ।

पस्तकधारिणीं, वीणावादिनी, वाणीदायिनीम, वन्दे, वन्दे १६। भयहारिणी, अभयदायिनी, आतङकनाशिनीम, वन्दे, वन्दे । ।

डा.बी.एन.कल्ला

Divine Dance of Lal Ded

लतंन हन्द माज लारयोम वतन अकी हॉवनम अकचीवथ इम इम बोजन तिम काने मतन लिल ब्रज पातन कनी कथ The Flesh of my soles stuck to the paths which I took to search that eternal 'one', that showed me the single pointedness and a single path to reach that only one. Lala heard thousands schools of thought but could conceive a single thought and a path. Why doesnot one, who hears this crave for!

Contents

- 1. Mata Ragyna Puja
- 2. Mata Sharika Puja
- 3. Mata Zwala Puja
- Readers Write

Cover Page Birth of Satisar (Kashmir)

Art & Design by Sh. Satish Munshi

Pearls of Rup Bhawani

रिछ स्यछ विद्या क्राजि आगरय तसि गरय व्यवव सागरय ग्वाहे। करि सर्य उदय चलि गटकारूय सहज विचार तथ साबुद।।

Riddhi-Siddhi-Vidva (facets of the Divinity) will gush cut of their eternal source. It will give name and fame to the seeker. The brilliant sun of prosparity & realities will rise and eradicate the darkness of ignorance. Everything will shine and the path will be simple straight and clear.

Satisar Speaks



शिव जुव ज़ान पनुन कर च्यथ ईकागरत् व्ययि केंह्र मत करत जिंद मरत् दित् समाध।

कोरमुत क्रोवमुतं स्वोरमुत मशरत्.....। मुचरिथ ज्ञान न्यथ्र करत् पान् याद

करनस न करनस बुहना योत करत् ब्ययि केंह्र मत करत जिंद मरत् दित समाध्।

"BATA BATA KAWA BATA"

The cultural ethos of all communities has started taking its present shape during the pre-historic times. The social values and tahoos continue to chisel and shape with the evolution. But the basic essence of the social fabric does not change even after the ions. Similarly, Kashmiri Pandit Community, a miniscule one developed its own cultural ethos and polished it to suit alongwith the times. The first chronicler, Kalhana has quoted several of our exemplary characteristics, especially of mutual help for social good. In this he refers to invader Hun King Mihirkula a shaivaite himself whom Kashmiri Pandits refused to accept as the King for demolishing several Buddhist temples of Kashmir and putting to sword thousands of Buddhist monks. Kalhana attributes to a strong social bond within the Kashmiri Pandits which gave them strength to face the kingship. Also, the maxim in Kashmiri "Bata Bata Kaw Bata" explains the social strength through unity and mutual help.

Unfortunately during pathan rule, this bond and sense of mutual help to advance the community interest suffered and got diluted and the high sounding phrase of "Bata Bata Kaw Bata" also demised and instead came up the culture of individual character which is decidedly a negative trend and may lead us to decimation and social disintegration.

It is, therefore, imperative that we again take up this mantle to explain to our coming generations to essence of Bata Bata Kaw Bata and inculcate in them a virtue by which wherever, they go they keep their community interests foremost and help fellow community members economically, emotionally, financially and whatever, and ensure mutual economic and social prosperity to ensure a sustained growth of the community as one of the strong social monoliths world over.

-Tatha Astoo

मुरानीय भारत वालय्व,

म्मि कि प्रम न्येत्र परण कर्णीस समयस प्रण पक्षन। म्मि क पन्न रुपुड त्राम्बन। स्मि क दुरंप दास्रड।

Sharda is our language. Let us start writing it Satisar shall be shortly bringing out a sharda primer for common masses

V. Wangnoo वि。 वागन्न

श्री महाराज्ञी भगवती पूजन विधि

(माता महाराज्ञी का चित्र साथ रखें)



गणपति जी का ध्यान करें जो शुक्लान्यर घरं विष्णुं शशिवणं चतुर्मुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविध्नो पशान्तये।। अभिग्रीतार्थं सिच्दयर्थं पृजितो यः सुरैरपि। सर्वविध्निध्यदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।। गुरू ब्रह्मा, गुरूः विष्णुः, गुरूः साक्षात् महेश्वरः। गुरूरेव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।। गुरुवे नमः, परम गुरवे नमः, श्री परमोद्धिने गुरवे नमः, श्री परमाचार्याय नमः।। आदिसिद्धस्यो नमः।।

देवी महाराजी का ध्यान / व नमस्कार करें ! निर्मुणे! निष्क्रिये! नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणे। नमोस्तुते महाराज्ञि पाहिमाम् शरणागतम्।। अनामिका (Sun Finger) में पवित्रक पहनें (या फूल हाथ में रखें)

यदि अँगूठी हो तो (नग के बगैर) पवित्रक की जगह पहने वसो पवित्रमसि शतघारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारं। अयक्ष्माव प्रजया संस्त्रामि, रायस्पोषेण बहुता मवन्ती।। स्त्वरीण को तित्रक व फूल (अक्षत) चढ़ावे स्वप्रकाशो महादीप: सर्वतः तिमिरपाहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकत्थितः।। चूप को तित्रक व पुष्प (अक्षत) लगावें वनस्पति रसो दिव्यो, गन्धादयो गन्धवत्मः। आघारः सर्वदेवानां चूपोऽयं परिकत्थितः।।

सूर्य भगवान का ध्यान करें (Offer the flowers & Argh to sun)

नमं—नमं धर्म निधानाय, नमः सकृतसाक्षिणे।
नमः प्रत्यक्ष देवाय, श्री भारकराय नमो नमः।
निर्माल्य पात्र (थाली) में जल की धारा डालते हुए पढ़ें।
यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहुज्जनशच
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः, तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।
आत्मने नाराणाय आधार शक्तयै श्री महाराज्ञी देव्यै पूजन निमिते।
ध्रप—दीप संकल्यात

सिद्धिर अस्तु दीपो नमः धूपो नमः बायां जनेफ रखकर पितरो को जल दान दे नमः पितृम्यः प्रतेम्यों, नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः

र्फं तत सत् ब्रह्म अद्य तावत्(Name of the Month)... पक्षगुक्ल पक्षस्य वासरां... DAY ...अष्ठम्यां.... श्री महाराज्ञी देव्यैं पूजनं निमित्ते घृषः स्वचा दीपः स्वघा

पुनः दाये तरफ जनेऊ रखें यदि आप महाराङ्मीपीठ पर बैठे हो तो आप माता महाराङ्मी पर जल चढ़ावे।

पानी पाच्य के लिए देवे (Offer water to the feet)
श्री राजये मगवतये पाच्यं नमः
पाच्य का बचा हुआ पानी छोड़कर नया पानी लेवे और अर्घ्य देवे
श्री राजये मगवतये अर्घ्यं नमः
तिलक लगाते हुए पढ़े।
श्री राजये मगवतये गच्चो नमः

अपने आप को मध्यमा अँगुली (Middle Finger) से तिलक, अर्घ-फूल चढ़ावें

परमात्मने पुरुषोत्तमाय, पंचभूतात्मकाय, विश्वात्मने मंत्रनाथाय, आत्मने नारायणाय, आधार शक्तयै समालमनं। गन्धो (तिलकं) नमः, अर्धो नमः, पुष्पं नमः।।

माता पर फूल चढ़ाते हुए पढ़े त्र्यक्षरी विद्याये नमः, नारायणी देव्ये नमः, नागहाराये नमः, अम्बाये नमः, वितस्ताये नमः, भूचरी खेचरी मुदाये नमः, नवमुदा विलासिन्यी नमः, नवस्यै नमः, नवाक्षयें नमः क्षीराम्बधि प्रियाये नमः राज्ये नमः

नमः, नवम्यै नमः, नवासयै नमः, क्षीराम्बुधि प्रियायै नमः, राज्ञयै नमः, मनुराज्ञयै नमः, कारयय्यै नमः, मुनिराज्ञयै नमः, रत्नराज्ञयै नमः, युगराज्ञयै नमः, सिन्धुराझयै नमः, वदीराझयै नमः, नदराझयै नमः, बिन्दुराझयै नमः, नारदराझयै नमः, आत्मराझयै नमः, पुत्रराझयै नमः, ध्यानराझयै नमः, जयराझय नमः, ईशानराझयै नमः, राक्षीइयै नमः, स्वाहाराझयै नमः, विह्निराझयै नमः, योगराझयै नमः, यझराझयै नमः, जगदाझयै नमः, तत्वराझयै नमः, वाग्राझयै नमः, पञचदशाक्षरी राझयै नमः, छँ ह्राँ मूतेन्दीन्वयँ नमः, छौ ह्री श्री रां वलीं सौः भगवत्यै राझये ह्रीं स्वाहा

श्री राज्ञयै दैव्यै अर्घो नमः, पुष्प नमः दीप/घूप चढाते हुए पढ़े श्री राज्ञयै देव्यै घूपं, दीपं/कर्पूर परिकल्पयामि नमः।

(फूल हाथों में लेकर) पढ़ें व चामर करें

लीलारब्ध स्थापित लुप्ताखिल लोकां, लोकातीते योगिमिर अंतर् इदि मुश्ग्याम्। बालादित्य श्रेणि समान द्युति पुत्रजां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु कहा क्षीम् अहम् ईंडे।।

> आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां, पादाम्मोज ध्यान पराणां पुरूषाणाम्। ईशीम ईशाड.गार्घ हरां तां तनुमध्यां,

शारिका अम्बाम् अम्ब रूहा क्षीम् अहम् ईहे।। प्रत्याहार ध्यान समाधि स्थिति भाजां, नित्यं चिते निर्वृति काष्ठां कलयन्तीम्। सत्य ज्ञानानन्दमयीं तां तङित् आमां,

शारदा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईंढे।। चन्द्रपीडा नन्दितमन्द स्मितवकत्रां चन्द्रापीडा लड. कृत लोला लकभाराम्। इन्द्रोपेन्द्रा द्यविंत पादाम्ब्ज युग्मां,

राजी अम्बाम् अम्बु कहा बीम् अहम् ईंडे।। नाना कारैः शक्ति कदान्यैः मुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडिति यासी स्वयमेका। कत्याणी तां कत्यलताम् आनतिमाजां, त्रिपुरा अम्बाम् अम्बु कहा बीम् अहम् ईंडे।।

मुलाघारात् उत्थित वन्तीं विधिरन्धं, सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताड् गीम। स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्—अभिवन्द्यां

वाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईछे।। आदि क्षान्ताम् अक्षर मृत्यां विलसन्तीं, भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्। शब्द ब्रह्मानन्दमयीं ताम् अभिरामां, बाला अम्बाम् अम्बु कहा क्षीम् अहम् ईहै।।

> यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्डं जगत् अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर अभूत् अक्षतमेव। भर्त्रो सार्घ तां स्फटिकाद्रौ विहरन्ती.

दुगा अम्बाम् अम्बु कहा क्षीम् अहम् ईढे।।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेष मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि घरं चायचरं च।
ताम् अच्यात्म झान पत्व्या गमनीयां,
काली अम्बाम अम्बु कहा क्षीम् अहम् ईढे।।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः, साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च। विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिवपत्नीं.

लस्मी अम्बाम् आनु कहा सीम् अहम् ईढे।।
पूजा काले भाव विशुद्धिं विदधानो,
भक्तया नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वावां सिद्धिं सम्पत्तिम् उच्नैः शिवभवितं,
तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदधाति।।
गौरीम् अम्बाम् अम्बु कहा सीम् अहम् ईढे।।
माता पर फूलों का छत्र चढावे
श्री राज्ञयै भगवतयै छत्रं परिकल्पयामि नमः।

माता को आईना (Mirror) दिखाते हुए पढ़े।
श्री राझयै भगवतयै आदर्श परिकल्पयामि नमः।
थोड़ा पानी किसी (निर्माल्य पात्र) में छोड़ते हुए पढ़े।
श्री राझयै भगवतयै पूजन निमते धूप दीपात् सहकल्प सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः
साफ पानी निर्माल्य पात्र में छोड़ते हुए पढ़े

मगवती को मन से आघा प्रक्रम करें तथा माफी माँगे। अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यम, आज्यम, अन्नम अद्य दिने अद्य यथा सङ्कल्पात सिद्धिर अस्तु अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यद्गतं तत् स्वय अफिद्रं सम्पूर्णम् अस्त हाथ में पानी रख कर पढ़े।

श्री राज्ञयै भगवतयै **आचमनीयं नमः**

माता के सामने दक्षिणा रखें व पढे। एता राज्ञयै सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तः। (तत नैवेघ्य) अब नैवेघ्य लाये। नैवेद्य की थाली को छकर मन्त्र पढें

अमश्तेष्मुद्रया अमृतीकृत्य । अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्रणि सावात्रिस्य देवस्य त्वासवितः प्रसवे अश्विनो बीहभ्यां पुष्णो हस्ताभ्यामादधे। श्री महागणपत्यादि कलश मण्डल देवताभ्य, वास्तदेवादिभ्यः विष्णु पंचायतन देवताभ्यं। अभ्यङ करी देव्यै क्षेमड करी भवान्यै: सर्वशत्र घातिन्यै इह राष्ट्राधि पितये रुद्रराज शैरवाय (only in Jammu, recite the name of the Bhairav of your area) प्रज्ञच चत्वारिश्द्ध वास्तोषपति याग देवातायः, इंद्रयादिभ्याः दशलोकपालेभ्यः, आदित्यादिभ्यो, एकादश ग्रहस्याः, महागायत्रे, सावित्रे, सरस्वतयै हेरकादिभ्यो, वटकादिभ्योः ऊँ तत्सद बह्मा अधतावत तिथो। DAY मासस्य शक्ल पक्षस्य अष्ठमया तिथो DAY वासरायां श्री महाराज्ञी भगवतयै (ईष्टदेवि) संताषणांथं श्री महाराज्ञी पूजन निमिते जों नमो नेवेघ नेवेदयामि।

चट को (जो हम छत पर मातुकाओं के लिए बाहर रखते हैं) छूते हुए पढें। या काचिद्योगिनी रौदा सौम्या, घौरतरा परा, खेचरी, भचरी, रमा तष्टा भवन्तु में सदा, आकाशं मातुभ्यः, अन्नं नमः अर्धो नमः पुष्पं नमः (चट्र को तिलक व अर्घ-फल लगाये)

मगवती के लिए एक छोटी थाली में नैवेघ रखें। श्री राज्ञयै भगवतयै नैवेद्यं नेवेदयामि नमः थोडा मोग अलग से क्षेत्रपालों के लिए रखे व पढ़ें। भो अस्मिन निवासित क्षेत्र क्षेत्रपालः संक्रिकरः तस्मै निवेदयाम्यद्य बलि पानीय संययुत्तम्।।

क्षां क्षेत्राधि पतये अन्तं नमः। रां राष्ट्राधि पतये अन्तं नमः।

सर्वाभयं वरप्रद मयिपष्ठि पष्टपति दधात्। माता के विग्रह (फोटो) पर पुष्प (flowers) डालते हुए क्षमा मांगें। उद्यद्धिवाकर सहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां सिंहासनोपरिगतामुग्गोपवीताम्। खडगाम्बुजाढ्य कलशामृतपात्रहस्तां राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारविन्दाम।। तारामिन्द्रकलिकावतंसितं वेदसागरमणिं मनोहरम्। यो जपेद्षसि रत्नमालया राज्यमाशु लभते स साधकः।।

भतिमिन्दनवबिम्बमण्डितां नादबिन्दललितां जपेत्तु यः।

वरमेकमुरुवारणस्थितो जेष्यति स्मयमयानडरीत्रणे।।

रसां जपेद्यो भुवनेशि मन्त्री त्वन्मन्त्रमध्ये मदनोपतप्तः। रम्भां समालिङगय विमानचारी लीलां भजेन्नन्दनवाटिकायाम।।

वहिबीज मणिमाद्यसिद्धिदं बिन्दबिम्ब शशिखण्ड मण्डितम्। यो जपेन्निशि धनाभिलापवान स क्षणाद्रवति वित्तदोपमः।।

कामराजममराभिवन्दितं यो जपेन्निध्वनेडक्षमालया। तस्य यान्ति वशतां स्राडगनाः किं पूनर्जगति भूभृदडगनाः।।

> शक्तिं भक्तया यो जपेच्छक्ति पूजाकाले कालीपाद पार्पितान्तः। नक्तं तस्य स्मेरवक्त्रा घताची वश्या वेश्या स्विगता वा शची च।।

भगवत्यै तथा राइयै नाममन्त्रमिति रमरेत। यो देवि तस्य वश्याः स्यर्भैरवस्याष्ट्रसिद्धयः।।

मायां नमोन्ते यदि साधकेन्द्रो जपेन्महेशानि शिवालयस्थः। तत्रैव देवीं परमार्थराजीं पश्येत्स सद्यो वरसिद्धि दात्रीम।।

ठद्धयं यदि जपेन्निशाक्षये क्षीरभक स्वतिटेनी तटस्थितः। जिष्णविष्ण कमलासनेश्वरा यान्ति देवि वशतां तदा क्षणात्।।

भूगेहवृत्त त्रायनागपत्र षडारयोन्यश्रकबिन्द्बिम्बे। निषेद्रषीं राजकलाधिदेवीं राज्ञीं भजे राजकलावतंसाम्।।

देवि श्रीभृतधात्रीप्रवरगुणमये निष्कले निर्गुणे में माये मातः शरण्ये गिरिवरतनये चिन्मये तत्त्वरूपे। दर्गे चण्डि प्रमाथे त्रिपरविजयिनि स्मेरवके वरेण्ये कारूण्याढये प्रशस्ते सुरदितिजन्ते राज्ञी वै त्वं प्रसीद।। आनन्द वर्धनं गृह्यं परमैश्वर्यकारणम्।

भोगापवर्गदं पुण्य। दारिद्य भयनाशनम्।। आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा भगवती त्वां प्रपन्नोस्मि

रक्ष मां शरणागतम क्षमापुष्पाणि दत्वा उभाभ्यां जानभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा, उरसा मनसा च नमस्कार करोमि नमः

Jvotishachyara & Karam Kand Shiromani Sh. Kashi Nath Handoo (Shiv Nagar)

गाष्ट्रिर अछॅर

वजलि कॅनि चोप

VIJAZIJULI KANI TSO'P

To bite a bit of the red side (red and ripe side of a fruit)

To mind ones own interest and not the other loss

RAGYNA BAGWATI



या द्वादशांक परिमण्डित मूर्तिरेका सिंहासन सिथितमतीमुरगैवर्श्ता च। देवीम अनन्यगतिरींश्वरतां प्रपन्नां तां नौमि भर्गवपुषीं पररमीय राज्ञीम्।।

In the last chapter of the Ragyna Pradurbhava in Brighu Samhita King Ravana in order to gain temporal power and glory worshipped goddess Parvati (Shama) who manifested herself to him in all her Nine aspects. For sometime he remained sober-minded and worshiped the goddess with all devotion, but later on because of his misdeeds Goddess Shama ordered Lord Hanuman to take her to Satisar. It is said that the Grandfather of Ravana, Rishi Pulatsya lived in Kashmir and it was he who had requested his Isht Devi "Shama to bestow her presence to him in Sri Lanka. The legend says that after the killing of Rayana (Sri Lanka) at the order of Lord Shree Rama Lord Hanuman carried her to Satisar (Kashmir) along with 360 Nagas. In Kashmir the Goddess Shama came to be known as Khir Bhawani or Ragyna Bagwati. How she became gouri (fair complexed) from the dark complexed one is an interesting story already elaborated in various purans. Her favourite offering consists of rice cooked in milk and sugar and all other vegetarian forms of diet

> अत्र स्थितामूच्छान्ता सा क्षीरखण्डाज्यमोजना। सात्विका सत्यरूपा सा देवी पंचदशाक्षरी

She was installed at village Tulamulla. Tulamulla is surrounded by the villages of Borus (Bhawanish), Ahatung (Tungish), Ladwun (Labdawan) wokur (Bhageh).

About 2½ miles to the east of Tulumulla lies the village of Dudharhom on the main branch of the river Sindh (Shiriyara refers this place under its old name Dugdhasrama).

In the Sanctum Sanctorium, the main spring dedicated to Goddess Khir Bhawani has an irregular septagonal shape with its apex called Pad (WG) in the east. The northern and the southern sides are longer than the western side which is called Shir (RW). The shape of the spring represents the seed Mantra Aim (R).

The water of spring changes its colour indicating the auspiciousness or niouspiciousness of future events. It changes the amrit into Red, Pink, Orange, Green, Blue and has often light Green, Red, Rosy, Black and Milky white shades. Adul Fazal in (16th century) and Swami Vivekananda in the vr. 1894 have testified the fact.

Some times there arise bubbles in the water which form the yantra (Geometrical figure) of goddess Ragyna or a snake or serpent shape or omkar shape.

The legend says that a pious Brahmin named Krishna Pandit of Habba Kadal in Srinagar had a vision about the location of the Kheer Bhawani. In his vision he was asked to hire a boat at Shadipora where from a snake would guide him to reach the destination. The snake guided him through swampy and Marshyland, of Achar Lake until he reached the hollow trunk of a mulberry tree on the bank of a spring. Discovery of this holy spring has been made on Ashtami of Jyeth month. So annual Mela is held on every Jyesta Ashtami.

The goddess Kheerbhawni is also known as Rani Brearie (Brear in Kashmir is Bhairavi) the supreme Bhairavi. Her Geometrical figure is given here along with the presiding detites of different Aawarans (301970).

> Her Mantta is ऊँ ड्रीं श्री रां क्लीं सौ: मगवत्ये रास्यै ड्रीं स्वाहा,

ह्यान उद्यत्–दिवाकर सहस्र रुघि त्रिनेत्रां, सहासनोपरिगतामुरगोपवीतां। खढ.गाम्बुजादय-कलरागृपात्र हस्तां, राष्ट्रीमजामि वकसद्वदनारविदाम्।। बिन्दुनत्रवर्ष भद्धत्रं च वृत्तास्ट बलगम्बितम्। वरत्वत्रवं घरा सद्य राष्ट्री श्री चक्रमीरितम।।



1. A Bindu - A point - श्री महाराज्ञिनयं नमः

2. Trikon - A triangle - महा कालियै नमः, महा सरस्वत्यै नमः, महासस्ययै नमः

- 3. Shatkon hexagon सरस्वत्यै नमः, लक्ष्मयै नमः, अष्टदश भजायै नमः दशाननायै नमः गाँगैनमः
- Valia A circle The relation between an individual and the cosmos.
- Ashta Dal Eight lotus leaves ब्रह्मौ नमः, महेष्यरायै नमः, कुमारायै नमः, वोष्टावै नमः, वाराहयै नमः, नरसिहै नमः, ऐन्द्रयै नमः, चामण्डायौ नमः
- 6. Tri Valai Three Circle (Innermost Circle) ब्राह्मी शक्तै नमः, माहेष्वरी शक्तै नमः, कुमारी

शक्तै नमः, वेष्नवी शक्तै नमः

Middle Circle – वर्ष शंबोणिनी गुरावे नव, वर्ष विस्तवनी गुरावे नवः। सर्वार्कष्णी मुदाये नमः, सर्व वाशिनकरी मुदाये नमः,।। Outer Circle – अनिमा सिद्धि नमः, महिमा सिद्धि नमः।

लिंघमा सिद्धि नमः, ईष्ट सिद्धि नमः।।

 Dwar - The Door - Here we worship Lord Ganesha, Kumar Ji, Indra Dev and others.

When being stationed in his (Ravana's) house, she felt vexed by his omissions, she resolved to proceed to the original native place of Pulatsya Rishi, i.e. Kashmir in the vicinity of Haramukha mountains, she ushered in the rule of law and piety, so came to be known as the great Empress (Mata Raghini).

Lord Ram directed Hanuman with the words, "Oh Hanumana – the bravest of all, take charge of Almighty Goddess – (Shree Shama) and proceed with ever nimble gait towards Kashmir. This (Flight of yours) will provide immense virtue to you?"

O, Bhariava, that Shama mounted on the Serpents – King Ananta, surrounded by three hundred and sixty snakes, was carried to a place in Kashmir, where the land is as soft as cotton, and thus earned the name of "Tulamulyakam" (Tulamulla). Here in these peaceful surroundings; she became calm and composed, in occult incantation of fifteen syllable Mantra.

Maha Raghini Pradurbava also indicted that on every fifteenth day of the Bright fortnight of Assuja month Shree Rama in the company of Sita Matta undertakes a pilgrimage to Kheer Bhawani and on 8th & 9th day of the bright half of the month of Assuja Manndodari and Bibehshanna visit the Shrine respectively. The mighty Hanuman stands guard there all the time.

The main assembly and annual festival at Tulamulla Khirbhavani is observed on Zeshta Ashtami. However, people attend the shrine on every Shukla Ashtami, observe fast, and attend night prayers at Tulamulla.

V. Wangnoo

महाराज्ञी राजराजेश्वरी राजर्यञ (कश्मीरी भाषा में एक लीला) राजर्यञ रानिब्राऽरी

लगय पादन व पाऽरी, राजर्यञ रानिब्राऽरी बुथहा सुलिमुले, राऽज्ञा छे तुल्लमुले दुघ हय मावस बुलि बुले — राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

केंह वान डूँग-नावन रऽत्य रऽत्य फल छि प्रावन

केंह यिवान ननवाऽरी - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

अल्म चानि लिछवज्य केंह छि लोचि केंह छे थज्य स्वर्ग–बोजि अऽन्य अऽन्टिक

- राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

सम छिय सुनसन्दिय मखत्य छिय अऽन्द्य अऽन्दिक

लागय व पोश-गोन्दिय - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

शाहमार छुय चे हटे

यिमहा व लटि लटे - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

म्य छयना चाऽनी कल जाय दिय म्य पादन तल

वथरावय व मखमल - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

चन्दन कुल मंज़ नागस विहित छख पोश-बागस

पारत छख पारा-बागस

पम्पोश पूजि लागस - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

दुदर्हामि द्युत म्य ताराह् बोज्**तम जार**—पाराह

कास्तन म्य लाचाऽरी - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

यस चीन नाव महो तस छय पश पशे

नरकग मंज सु क्रशे - राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

युस चीन नाव स्वरे तस क्या यम करे

जाय चाऽञ म्यानी घरे – राजर्यञ रानिब्राऽरी।।

राजर्यञ रानिब्राऽरी

श्री शारिका भगवती पूजन विधिः

जगतमाता श्री शारिका भगवती का चित्र (Photo) सामने रखें



गणपति जी का ध्यान करें जो शुक्लान्यर घरं विष्णुं शाशावर्णं चतुर्पुंजम्। प्रसन्तवनं ध्याये सर्वविधनो पशान्तये।। अभिग्रीतार्था संच्यार्थं पृजितो यः सुरैरपि। सर्वविधनछिन्दे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।। गुरूः ब्रह्मा, गुरूः विष्णुः, गुरूः साक्षात् महेश्वयः। गुरूरेव नमः, परम गुरवे नमः, श्री परमाध्यार्यय नमः।। आरिपिद्धन्यां नमः।।

देवी चक्रेयररी (शारिका) का घ्यान/व नमस्कार करें !
प्रधुम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशीमिताम्।
पीठेयर्वरीं शिला रूपां शारिका प्रणमान्यहम
अनामिका (Sun Finger) में पवित्रक पहनें (या फूल हाथ में रखें)
यदि अँगूठी हो तो (नग के बगैर) पवित्रक की जगह पहने
वसो पवित्रमसि शतवार वसूनां पवित्रमि सहस्त्रवायम।
अयस्मा व. प्रजया संस्कृणामि, रायस्पोषण बहुता गविन्तां।।
रत्नदीय को तिलक व फूल (अक्षत) चढ़ावे
स्वप्रकाशो महादीयः सर्वतः तिमिरापहः।
प्रदीद मम गीविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।।
धूप को तिलक व पुष्प (अक्षत) लगावें
वनस्पति रसो दिव्यो, गच्यावयो गच्यवत्तः।
आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।।

सूर्य भगवान का ध्यान करे (Offer the flowers & Argh to sun) नमो-नमो धर्म निधानाय, नमः सकृतसाक्षिणे।

नमः पत्यक्षदेवाय श्री भास्कराय नमो नमः। निर्माल्य पात्र (थाली) में जल की घारा डालते हुए पढ़ें। यत्रास्ति माता न पिता न बन्धः भ्रातापि नो यत्र सुहज्जनश्च न जायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।। आत्मने नाराणाय आधार शक्तयै श्री शारिका देव्यै पूजन निमिते। दीप-धूप संकल्पात सिद्धिर अस्त् दीपो नमः, धूपो नमः बायां जनेऊ रखकर पितरो को जल दान दे नम:पितश्रन्य:प्रतोभ्यो नमो धर्माय विष्णव ।नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः कँ तत सत् ब्रह्म अद्य तावत (आषाढ शुक्ल नवम्या) वासराश्री शारिका भगवतयै दीपः स्वधा धूपः स्वधा पुनः दाये तरफ जनेक रखें यदि आप शारिकापीठ पर बैठे हो तो आप माता शारिका पर जल चढावे थोडा सा जल हाथों में घारण करके माता के चित्र (Photo) पर जल की बुदों से पाष्य दे पानी पाष्य (Offer water at feet) के लिए देवे श्री शारिका भगवतयै पाध्यं नमः हाथ में पाघ्य का बचा हुआ पानी छोड़कर नया पानी लेवे और अर्ध्य देवे श्री शारिका भगवतयै अर्ध्यं नमः तिलक लगाते हुए पढ़े। श्री शारिका भगवतयै गन्धों नमः अपने आप को मध्यमा अँगुली (Middle Finger) से तिलक, अर्घ-फूल चढ़ावें परमात्मने पुरुषोत्तमाय, पंचभुतात्मकाय, विश्वात्मने मंत्रनाथाय, आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै समालभनं। गन्धो (तिलक) नमः, अर्घो नमः, पृष्पं नमः।। फूल चढ़ाते हुए पढ़े गौर्ये नमः, शच्यै नमः, अलकायै नमः, प्रस्तरायै नमः, बालायै नमः दीप्तायै नमः, कुलाकुलोपदेशान्यै नमः, कालायै नमः, भद्रकाल्य नमः,

जगदम्बायै नमः, लक्ष्मी नमः, वटकायै नमः, चेतनायै नमः, विद्यायै नमः,

स्कन्दमात्रेयै नमः काश्मीर्यै नमः गजास्यजनन्यै नमः षोडशस्वर

रूपायै नमः, कुलाकुलविचारिण्यै नमः, शिलापूजन हर्षितायै नमः,

शिलारूपायै नमः, भैरव्यै नमः, राजराजेश्यै नमः, योगगभ्यायै नमः,

भर्गशिखायै नमः, भद्रिकायै नमः, बलदाय नमः, पुत्रदायै नमः, पीठस्थितायै

नमः, घट्वक्र क्रमः पूजितायै नमः, वसुकोण स्थितायै नमः, विकोमपूजनप्रियायै नमः, वकुरायै नमः, त्रिकुरायै नमः, त्रिलोकजनन्यै नमः, जों ही श्री हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः। श्री शारिका मगवतयै अद्यो नमः, पुष्पं नमः।। श्री शारिका मगवतयै अद्यो नमः, पुष्पं नमः।। यस्याम् स्वीप/पूप चढाते हुए पढे श्री शारिका मगवतयै पूजन निमित्ते धूपं, दीपं/कपूर परिकल्पयामि नमः। (पुत्त डाप्यों में लेकर पढ़े .. व. चामर करें) तीलार्खा स्थापित लुनाखिल लोकां, लोकातीतै योगिमिर् अंतर हृदि मृग्याम्। बालादित्य श्रीण समान द्यति पुत्रजां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु कहा सीम् अहम् ईहै।।

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां, पादाम्भोज ध्यान पराणां पुरुषाणाम् । ईशीम् ईशाङ् गार्धं हरां तां तनुमध्यां,

शारिका अम्बाम् अम्बु कहा सीम् अहम् ईडे।।

प्रत्याहार ध्यान समाधि स्थिति भाजां, नित्यं चिते निर्वृति काण्डां कलयन्तीम्। सत्य ज्ञानानन्त्रमयी तां तांडित् आमा,

शारदा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।। चन्द्रपीडा नन्दितमन्द स्मितवकत्रां

चन्द्रपाडा नान्द्रनमन्द्रास्पतवकत्रा चन्द्रापीडा लङ्कृत लोला लकमाराम्। इन्द्रोपेन्द्रा द्यर्चित पादाम्बुज युग्मां, राज्ञी अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईढे।। नाना कारै, शक्ति कदम्बे मुवनानि,

व्याप्य स्वैरं क्रीडित यासौ स्वयमेका। कल्याणी तां कल्पलताम् आनितभाजां, त्रिपुरा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

मुलाधारात् उत्थित वन्तीं विधिरन्ध्रं सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताड् गीम । स्थलां सक्ष्मां सक्ष्मतरां ताम—अमिवन्दां

ज्वाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

आदि क्षान्ताम् अक्षरं मूर्त्या विलसन्तीं, भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम् । शब्द ब्रह्मानन्दमयीं ताम् अभिरामां,

बाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

यस्याः कक्षौ लीनम् अखण्डं जगत् अण्डं,

भूयो भूयः प्रादुर अभूत् अक्षतमेव। भर्त्रा सार्घ तां स्फटिकाद्रौ विहरन्ती, दगा अम्बाम अम्बू रूहा क्षीम अहम् ईखे।।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च। ताम् अध्यात्म ज्ञान पदव्या गमनीयां,

काली अम्बाम् अम्बु रूहा झीम् अहम् ईंडे।।

नित्य सत्यो निष्कल एको जगदीशः,
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च।

विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिवपत्नीः,
लक्ष्मी अम्बाम् अम्बु रूहा झीम् अहम् ईंडे।।

पूजा काले भाव विशुद्धिं विदधानों, भक्तया नित्यं जत्मति गौरीदशकं यः। वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम् उन्त्यैः शिवभक्तिं, तस्या वश्यं पर्वत पत्री विदधाति।।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु क्तहा क्षीम् अहम् ईडे।।

माता पर फूलों का छत्र चढ़ावे
श्री शारिका भगवतये छत्रं परिकल्पयामि नमः।
माता को आईना (Mirror) दिखाते हुए पढ़े।
श्री शारिका भगवतये आदर्श परिकल्पयामि नमः।
खोड़ा पानी किसी (निर्माल्य पात्र) में छोड़ते हुए पढ़े।
श्री शारिका भगवतये पुन्न निमने वृद्य रोधात सडकल्य खिद्धरस्तु धूको नमः दीचो नमः
साफ पानी निर्माल्य पात्र में छोड़ते हुए पढ़े
श्री शारिका मगवतये वासो नमः
मगवती को मन से आधा प्रक्रम करें तथा माफी माँगे।

श्री शारिका मगवतयै वासो नमः भगवती को मन से आधा प्रक्रम करें तथा माफी माँगे। अन्न नमः अन्न नमः आज्यम आज्यम अन्न अद्य दिने अद्य यथ सडकल्पात विदिर अनु अन्वित विवदीन विविदीन स्वादीन करान व वरान तन् संबम अप्रिट सम्पूर्णम् अस्त हाथ में पानी रख कर पढ़े।

श्री शारिका भगवतथै आचमनीयं नमः माता के सामने दक्षिणा रखें व पढ़े। एता भगवतथै सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तः।

(तत नैवेघ्य) अब नैवेघ्य लाये। नैवेद्य की थाली को छुकर मन्त्र पढ

अमृतेष्पुदया अमृतीकत्य । अमृतमस्तु अमृतायता नैवेद्य सावित्रणि सवात्रिस्य देवस्य त्यासवितु हस्तान्यामादधे। श्री महागणमत्यादि कलश गण्डल देवतान्य, वासुदेवादिन्यः विष्णु पंचायतन देवतान्यं। अभ्यड करी देव्यै क्षेमड करी भवान्यै,

सर्वशत्र घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये रुद्रराज भैरवाय (only in Jammu) पञच चत्वारिशद्धवास्तोषपति याग देवातायः इंद्रयादिभ्याः दशलोकपालेभ्यः आदित्यादिभ्यो एकादश ग्रहभ्यां महागायत्रे सावित्रे सरस्वतयै हेरकादिभ्यो वट्कादिभ्योः ऊँ तत्सद बह्मा अधतावत तिथो। आषाढ मास्स्य शक्ल पक्षस्य ... नवम्यां Day वासरायां श्री शारिका भगवत्यै (ईष्टदेवि) संताषणार्थं श्री शारिका पूजन निमिते जो नमो नेवेध नेवेदयामि। चट् का (जो हम छत पर मातुकाओं के लिए बाहर रखते हैं) छते हए पढ़े। या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या, घौरतरा परा, खेचरी, भूचरी, रमा तुष्टा भवन्त् में सदा, आकाशं मातुम्यः, अन्तं नमः अर्घो नमः पृष्पं नमः (चट् को तिलक व अर्घ-फल लगावें) मगवती के लिए एक छोटी थाली में नैवेघ खों। श्री शारिका भगवतयै नैवेद्यं नेवेदयामि नम थोड़ा मोग अलग से क्षेत्र पालो के हेत् रखे व पढें। यो अस्मिन निवासित क्षेत्र क्षेत्रपालः संक्रिकरः तस्मै निवेदयाम्यद्य बलि पानीय संययत्तम।। क्षां क्षेत्राधि पतये अन्नं नमः। रां राष्ट्राधि पतये अन्नं नमः। सर्वामयं वरप्रद मयिपृष्ठि पृष्टपति दधात। माता के विग्रह (फोटो) पर ज़मा पृष्प अर्पण करते हुए पढ़ें। श्री शारिके शरण्ये त्वं मिय दासे दयां करू

अमे सरेशि योगीन्द्र अमृत पायन तत्परे।

श्री शारिके नमस्ते अस्त पाहि मां शरणागतम्।। 1 कामे कामित कामानां परणे पर्णताप्रदे।

श्री शारिके नमस्ते अस्तु पाहि मां शरणागतम।। 2 चार्वडिंग कोटि कन्दर्प लावण्ये विश्वमोहिनि।

श्री शारिके नमस्ते अस्त पाहि मां शरणागतम।। 3 टड,कघारिणि शत्रणां तिलशो देहखण्डिन।

श्री शारिके नमस्ते अस्त पाहि मां शरणागतम।। 4 तारे निर्सग गम्भीर भवसागर तारिणि।

श्री शारिके नमस्ते अस्त पाहि मां शरणागतम।। 5 पार्वति त्रिजगन्मातः हिमवट वंशपावने।

श्री शारिके नमस्ते अस्त पाहि मां शरणागतम।। 6 यक्षिणीष्टाष्ट सिद्धीनां दायिनी देवपजिते।

श्री शारिके नमस्ते अस्त पाहि मां शरणागतम।। 7 आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थास सर्वदा मगवती त्वां प्रपन्नोस्मि

रक्ष मां शरणागतम इत्यादि क्षमापुष्पाणि दत्वा उभाग्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा च उरसा मनसा च नमस्कार करोमि नमः

Jyotishachyara & Karam Kand Shiromani Sh. Kashi Nath Handoo (Shiv Nagar)



ऋणं रोगं भयं शोकं रिपून्नाश्य सत्वरम। Readers Write

- Dr. Bal Krishen Bhat U.S.A. Satisar team is doing a wonderful job. We wish them all the
- Sh. C.L. Sapru-Surat Kindly provide me the material on "Saints of Satisar". I also received the Navreh Card along with the "Vaie". Thanks,
- Sh. Vikas Ganjoo Srinagar Kudos to you all who have taken up a mission for propagating & preserving Kashmir Shaivism and Socio-Cultural ethos of
- Kashmiri Pandits. Sh. Shiban Krishan, Behind Army Headquarter Camp, New
- My best wishes for continuation of the noble cause undertaken by your organization
- Sh. B.L. Kash Kari & Sh. B.N. Zutshi Vasundara Enclave
- Thanks for the calendar, I distributed all of them. Kindly accept

- my good wishes for the revival of our fading away Cultural & Social Heritage
- Major General, J.N. Taimmi, Dehradun
- Kindly send the religious cultural publications to me regularly. Mr. B.K. Zutshi Dehradun
- Kindly send the religious cultural publications to me regularly.
- Sh. Duda Gujrat, Via e-mail Kindly send a list of items which are available free of cost at
 - Satisar Heritage Shop.
 - Mrs. Veena Bhan Via e-mail
 - It is after 54 years I could understand the meaning of "Pestle" in our Rituals. Thanks.
- Mrs. Radika Sood, Kolkalta
- Slow & Steady wins the race. Satisar has proved this. Good wishes for unparalell work in shaping the cultural destiny of our community & then India

Dear Friends.

The work taken up by the "Satisar Foundation" cannot reach to its ultimate target without your participation. We need you for you being the limbs of our culture. Culture is not a static thing it is always dynamic. So, involve your self in propagating the free literature by inhabing these practices & values.

From this issue onwards our material will be not the just to fill the pages by articles, but it will be a course material for the people who want to know & practise the different schools of Kashmiri order. So read & qualify yourself.

Cover Page Story :- BIRTH OF SATISAR & KASHMIR



The land of Kashmir was occupied for six manvantras since the begining of Kalpa by a vast lake in the pirpanjal range form veri Nag to Baramulla called the Satisar. (Lake of Mata Sati Parvati)

नौदेहेन सती देवी भूमिंभवति पार्थिव। तस्मानु भूमौ सरस्तु विमलोदकम्। षड्योजनायतं रम्यं तदधेर्णं च विस्तृतम। सतीदेशमिति ख्यातं देवाक्रीडं मनोहरम।

The goddess SATI, with the body in the form of the boat, becomes the earth and on that earth comes into being a lake of clear water, knwon as SATIDESA.....A Sporting place of Gods.

कः प्रजापतिरूदिवष्टः कश्यप च प्रजापतिः। तेनेदं निर्मितं देशं कश्मीराख्यं भविष्यति।।

Prajapati is called Ka, Kashyapa is also a Prajapati, Built by him, This place will be called "KASHMIR"

Once Devraj Indra & Mata saci appeared on the bank of this lake in a playful mood. There appeared a Daitya Chief named Sangrahsutra. One seeing most beautiful Devrani saci the demon discharged semen in the lake. Mad, due to passion wanted to carry her away. Devraj Indra, his evil deseres picks up a fight with him which laed for one year and the demon gets killed at the end of the year. The seed of Sangrahsutra sprouted in the form of a bony baby who was brought up by the nagas due to compassion. The baby was named Jalodbhava (Water born) (In the cover page picutre bottom left corner the demon behind the trees watching Neelnag who visulizes the destruction casued by the cannibal.) This child Jalodbhave grew up to be giant cannibalistic fiend whose deprectation was limit less and he managed to obtain a three fold boon form lord Bramaha after performing a rigorons penancel, that he

would not get killed is water or in dark ness. 2. Could chage his form at his will. 3. Could not be killed with the weapon of any Dev or Devi. Nilnaga after listening and seeing the woes of Nagas decided to approach his father Rishi Kashyapa grandson of lord Brahma. Who was then on a piligrimage to various places in India. Nilnag approached him and requested him to visit satidesha. The great saint had premeditated and delighted to complete his cosmic circle by visiting satisar. (Bottom picture-2) Kashvap rishi the great saint and grandson of creater was moved to see the plight of the people and practised a penance for along time and the gods and godness, fell, Compasion for him. At last all Devi Devtas decided to kill the demon and reached satisar one and all on theer respective wahans (Picture lower righr corner of the cover page). The demon suspecting the trouble hid himself in water and created artificial darkness. Lord Shiva took the sun in his hand as a torch and exchanged his tridend (trishul) with Lord Vishnu who gave him suderhsan chakra. Lord Vishnu ordered Ananta (The king of Serpents) to break the mountain at Khadanyar Baramulla with his plough to drain off water (cover page picture top right corner). The Water of the Lake was drained off but the water of Pokri (Spring) near Hari Harbah (Present Day Pokhribal) would continue to gush out. The Demon hid himself in this water. Mata Sarika the goddess of many devotees moved by the pity and in the form of a myana (in sanskrit Saree) (Sparrow) carried a celestial stone (pebble) and threw it upon the spring the source of the spring got temporarily blocked Lord Shiva & Lord Vishnu used their exchanged weapons and cut the head of the cannibal. The Stone of Mata Sarika grew into a huge serpent shaped Mountain under which the domain got burried forever, The Mountain came to be known as Hariparbat and is known with this name till date. It is also called Sharika peeth. Since then the land of the valley and lake came to be known as Kashypmar abode of Kashyap and later Kashmir. (Middle portion of Cover page)...... Mata Sarika is Ishtdevi of lot of devotees and Kashmiri families The stone assumed a form of Shri Yantra and Shr Sharika Chakare has been seen in the Shilla by many devotees time and again.

Satish Munsh

Hreem Bheejagatha nada bindu bharitham



Brahmanda Ganodhareem Gunavathim, Jnaneswareem Jnanadam,

Ichagva Kridineem Mahim Gathavadeem Gandarwa Sevitham, SriChakra Priya Bindu Tharpana Param Sri Raja Rajeswarim.

Salutation to Goddess Rajarajeswari,

Who got pleased by worship of Shree chakra.

Who is full of the sound and bindu (dot) arising out of "Hreem"

Whose soul is the holy sound "OM".

Who is slightly bend because of her huge breasts (because she feeds the universe)

Who is of a great character.

Who is goddess of knowledge, who gives knowledge.

Who plays as per her wish.

Who goes around the world.

And who is served by celestial maidens.

The bindu, represents Shiva-Shakti in union in the casual state from which all the other parts of the diagram, representing the cosmos, are evolved.

In India there are about 52 energy centers (যথিব থিৱ). But the energy centre of Hari Parbat (যথিব খৰ্মবা) rested on the Pradumn Peeth (অধুন খিৱ) is only one of its kind in the whole universe. There are various proofs to prove that the Shakti Peeth of Kashmir is unique and the most secretive one than the other Peeths

बीजैः सप्तमिरज्जवला कश्तिश्सौ या सप्तसप्तिघृतिः, सप्तर्षि प्रणाताङ्,घ्रि पङ,क जपुगा या सप्तलोकातिहृत्।

काश्मीर प्रवरेशमध्य नगरे प्रधुम्नपीठे स्थिता, देवी सप्तकसंयुता मगवती श्रीशारिका पातु नः

The whole hill of Hari Parbat seems to be the Multi dimensional figure of the Shri Yantra The geometrical

figure of Goddess Lalita (Sharika) and at every corner on this hill resides the presiding deities of the different angels and Triangle of this Shri Chakra.

Our tradition make us believe that on the day of Navreh (The New Year of K.P.'s) the Shri Chakra emits the maximum energy and lot people have actually witnessed the emerging Chakra's (Triangles) on the holy rock. On this day people observe a ritual by offering the Bal (सन-वित) known as "Tchout Kharun" चोर जागि on the hill top. In this article we will focus on the geometrical figure of the Mother Goddes.

Shakti is always accompanied by her Bhairava Sharika's is "Vamdeva" whose place is there over the hill lock of Sharika Parbat. (Hari Parbat)

The eighteen armed goddess mother Jagatamba Sharika Bagwati is also known as Maha Tripursundhari and is called folk lore as "Harie" sparrow. (word emerged from Sanskrit Hari Saree)

The entire hill is a "Cosmo gram" – representation and origin of the universal processes of emanation and re-absorption reduced to their essential outline.

Every body be it Humans or deities or Rishis have their fixed place on this Sidha Peeth. So, many sages have attained great spiritual power by merely crumbling the hillock. The parikrama starts from Lord Ganesh and culminates at the holy place of Lord Hanuman.

The birthday of Sharika is celebrated on Haar Navami which falls around June-July.

It is believed that during the dark periods of Kashniri Pandit history i.e. when they were forced to in the past leave the valley our fore fathers took shelter at a place where they got some solace. Because of this the place got its name as Kasht + Nivaran = Kastwar now Kishtwar.

Kashmiri Pandits have tremendous faith on the Mata Sharika so, they propitiated her to be present at Kishtwar too.

The Legend says that Goddess Sharika from Hari Parbat (Srinagar) came through Singhpora pass and took rest in the cave. It is believed that mother Sharika shifts during winter to this place known as Sarthal Mata which can be accessed from Kishtwar 19 km away.

We are thankful to the Shri Shri Jagadamba

Chakreshwar Sanstha Sharika Devi Angam (Polura Dok) J&K for providing us the vital data & information for this article

Let us pray to goddess by this ancient mystic poetry in praise of Mother Sharika written by Sh. Krishen Joo Kar who was a great devotee of Jagadamba.

श्री शारिका नमः (In Persian)

वन्दे भिलातन ईभ्वरी श्री भारिका देवि नमः मेहरे चराचर ईश्वरी श्री शारिका देवि नमः

नरे जहाँ सन्दरी ताबिन्दा मेहरे अनवरी माहे अफरोज अखतरी श्री शारिका देवि नमः

सिहमे गजानफर वाहान अस्त, शिव शक्ति जिरेर अहन अस्त लालो ज्वाहर टामन अस्त श्री शारिका देवि नमः

> बर हर सेह कारण बरतरी दर हरद आलम सर्व्य बर फरखे अन्दर अफसरी. श्री शारिका देवि नमः

गरदे राहत फोहले बसर, खाके घीरत नुरे कमर संगे समीरत खिशत जर श्री शारिका देवि नमः

> त् चार दह रतने गारन, त् नव निधाने जावेदन त खाने गौहर शृद्ध अयन, श्री शारिका देवि नमः

हर पेंजा कारण बायुक्त तू. फरमान खाने शक्त तू सर करदे जेरे तख्त त. श्री शारिका देवि नमः

> देवि। जगत माता तृही, शिवशक्ति गुर त्राता तृही माता पिता भरता तही. श्री शारिका देवी नमः

जाहिर तही बैटितन तही, हाजित तही नाजिर तही अव्वल तही आखिर तही श्री शारिका देवि नमः

जागे रा सर्वा सामान तही, शाहे शहँशाहान तही जिस्मे जहाँ अरा जॉ तूही, श्री शारिका देवि नमः

लक्ष्मी जहाँ आरा तृही, माया घिशन अफजा तृही बद्धि महा विद्या तही. श्री शारिका देवी नमः

चक्रेश्वरत हाजत खा सजी गदा रा पादशाह वाह-वाह चा लक्ष्मी थापना श्री शारिका देवी नम

मन अज त नाडी चक्रमन, ध्यान अज त जपमाला यि मन प्राण अज तु प्राणायम मन, श्री शारिका देवी नमः

> मन आरूजयम बे नवाह, उफतादमे बा दस्तो पा दास्तन बैगैर अज तु दया, श्री शारिका देवी नमः

हे ईष्ट देवी शारिका, दास चोन छुय भक्तकार कृष्ण गोयम तोता जोयम दय श्री शारिका देवी नमः

V. Wangnoo

LET US LEARN

Amush speaks to his grandfather.

Amush Tatha ji

What is the scientific secret of wearing (Tilak mark) on our forehead?

Grandfather Tathaji: What a lovely guestion you have asked my son Before I explain you The Scientific aspeact of it? I would like to tell you in nutshell its dharmic (religious) aspect also. Wearing the Spiritual threads (Yagneopavit keeping a tuff of hair on the head (Shiksha), wearing Tilak and unwoven threads as belt with untailored cloth as under wear (Aatipan Sranpath) are the signs and symbols of being a hindu. So wearing a Tilak is one of them.

स्नानं दानं तपा होमो देवता पिंतु कर्मच। तत्सर्व निष्फल याति ललाटे तिलंक बना।। बाह्मणस्तिलकमं कत्वा कय्यत्सिध्यां च तपर्णम

Without wearing a Tilak on the forehead, taking a bath, offering Alms, doing meditation, performing yagyas, offering Devpooia, Pitrpooia or Karma all go waste. After wearing a Tilak a Brahman Should do Sandhya and Tarpan. There are many types of Tilaks, like Saffaron, Chandan (Sandal wood), Ash (Bhasma) Vermillion (Kumkum) Red Oxide of mercury (Sindoor) Gopi Sandal Rakhta Sandal etc. I will answer your questions about now its Scientific aspect. The part of our brain called cerebrum is located in the front top part of the skull. It Controls, mental activities such as speech. behaviour thinking will and language. It controls the voluntary functions of the body and interprates the skin sense. Such as touch, pain, pressure, temperature & vibrations a part o it is very near to the Central part of the forehead between the eve brows. It is the central point of the mind

Over using of brain sometimes causes pain in thi centre Therefore our Rishis & Munis devised a system of wearing a Tilak. All Doctors Vaidyas and Hakims realise th value of Sandal. It is cool the Tilaks of Sandalwood pas on the Central point of mind keeps the brain tissues, activ soft cool and balanced. The energy rays inform of vibration enter the brain and do not excite the tissues & nerves. The a person wearing a Tilak always will maintain a good bra power and hardly experiences a head ache

Amush: Thank you Thatha ji. I will ask you mo about it some other day. I have to do a little bit of Scho home work. May I take leave of you. Good Night Tatha O.K. Beta Shubratri, Tstu lasssun nauon the foullun.

Sub. Edi

श्री ज्वाला भगवती पूजन विधि

सामने जगतमाता ज्वाला भगवती का चित्र (Photo) रखिये



गणपति जी का ध्यान करें जों शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतर्भजम। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नो पशान्तये।। अभिप्रीतार्थ सिध्दयर्थं पुजितो यः स्रैरपि। सर्वविध्निकडे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।। गुरू: ब्रह्मा, गुरू: विष्णु:, गुरू: साक्षात महेश्वर:। गुरूरेव जगत सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।। गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, श्री परमेष्टिने गुरवे नमः, श्री परमाचार्याय नमः।। आदिसिद्धभ्यो नमः।। ज्वालादेवी का ध्यान / व नमस्कार करें ! ज्वालामुखि महाज्वाले ज्वाला पिंगललोचने। ज्वालातेजे महातेजे ज्वालामुखि नमोस्तुते अनामिका (Sun Finger) में पवित्रक पहनें (या फूल हाथ में रखें) यदि अँगुठी हो तो (नग के बगैर) पवित्रक की जगह पहने वसो पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारंम। अयक्ष्मा वः प्रजया संसुजामि, रायस्पोषेण बहुला भविन्तं।। रत्नदीप को तिलक व फुल (अक्षत) चढावे स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।। घूप को तिलक व पुष्प (अक्षत) लगावें वनस्पति रसो दिव्यो, गन्धाढयो गन्धवत्त्मः। आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।। सूर्य भगवान का ध्यान करें (Offer the flowers & Argh to sun) नमो-नमो धर्म निधानाय, नमः सुकश्तसाक्षिणे।

नमः प्रत्यक्ष देवाय, श्री भास्कराय नमो नमः।

> यदि आप ज्वालापीठ पर बैठे हो तो आप माता ज्वाला देवी पर जल चढ़ावे।

थोड़ा सा जल हाथों में घारण करके माता के चित्र (Photo) पर जल की बूदों से पाध्य दे पानी पाध्य (Offer water at feet) के लिए देवे श्री ज्वाला देव्ये पाध्यं नमः हाथ में पाध्य का बचा हुआ पानी छोड़कर नया पानी लेवे और अर्घ्य देवे श्री ज्वाला देव्ये अ<u>र्घ्य नमः</u> तिलक लगाते हुए पढ़े। श्री ज्वाला देव्ये <u>गम्धों नमः</u>

आ पत्नाला द्रय्य गुन्धा नुमः अपने आप को मध्यमा अँगुली (Middle finger) से तिलक, अर्ध-फूल चढ़ावें परमात्मने पुरुधोतामाय, पंचभूतात्मकाय, विश्वात्मने मंत्रनाथाय,

आत्मने नारायणाय, आधार शक्तयै समालभनं। गन्धो (तिलक) नमः अर्घो नमः पद्धां नमः।।

गन्धो (तिलक) नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।।

फूल चढ़ाते हुए पढ़े

कें हीं ज्वालामुख्ये नमः शुमाये नमः, दुःखहारिण्य नमः, बलिप्रियाये नमः, नागकन्याये नमः, मार्तण्डरूपाय नमः, मूलाधाराये नमः, दुर्भारयहराये नमः, षट्चक्रस्थाये नमः, सुमद्राये नमः, वितस्ताये नमः, ताप्ये नमः, शिवसङ्गाये नमः, मलिम्लुच्ये नमः, सन्व्याये नमः, अग्निवाहनये नमः, अग्नीस्यर्थे नमः, बलाकाये नमः, स्कन्यमात्र नमः, गुस्ताये नमः, प्रकटाय नमः, मनोरमाय नमः, वरदायै नमः, प्रेतस्थायै नमः, वहिनलोचनायै नमः, अग्निमुख्यै नमः, महादीप्तयै नमः, सेद्रायै नमः, वसुंघरायै नमः, सप्तस्वरायै नमः, कालरात्र्यै नमः, महारात्र्य नमः, महाविद्यायै नमः, ज्वालामुखीश्वरी देव्यै नमः, ऊँ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः, ऊँ हीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून भक्षय भक्षय हीं फट

स्वाहा। श्री ज्वाला भगवतयै अर्धो नमः, पुष्पं नमः।।

दीप/धूप चढाते हुए पढ़े व (चामर) करें श्री ज्वाला भगवतयै धृपं, दीपं / कर्प्र परिकल्पयामि नमः।

(फूल हाथों में लेकर)..... व (चामर) करें लीलारब्ध स्थापित लुप्ताखिल लोकां.

लोकातीतै योगिभिर् अंतर् हृदि मुग्याम्। बालादित्य श्रेणि समान द्यति पूञजां,

गौरीम् अम्बाम् अम्ब रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां पादाम्भोज ध्यान पराणां पुरूषाणाम्। ईशीम् ईशाड् गार्ध हरां तां तनुमध्यां, शारिका अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

प्रत्याहार ध्यान समाधि स्थिति भाजां नित्यं चिते निर्वृति काष्ठां कलयन्तीम्।

सत्य ज्ञानानन्दमयीं तां तडित् आमां,

शारदा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईछे।।

चन्द्रपीडा नन्दितमन्द रिमतवकत्रां चन्द्रापीडा लड्.कृत लोला लकभाराम्। इन्द्रोपेन्द्रा द्यर्चित पादाम्बुज युग्मां, राज्ञी अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

नाना कारै: शक्ति कदम्बै: भूवनानि, व्याप्य स्वैरं कीडित यासौ स्वयमेका। कल्याणीं तां कल्पलताम आनितमाजां.

त्रिपुरा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

मुलाधारात् उत्थित वन्तीं विधिरन्ध्रं, सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताड,गीम। स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्–अभिवन्द्यां

ज्वाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।। आदि क्षान्ताम् अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं,

भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम।

शब्द ब्रह्मानन्दमयीं ताम अभिरामां.

बाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

यस्याः कक्षौ लीनम अखण्डं जगत अण्डं. भूयो भूयः प्राद्र अभूत अक्षतमेव। भर्त्रा सार्घ तां स्फटिकाद्रौ विहरन्ती,

दुगा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईहे।। यस्याम-एतत्प्रोतम-अशेषं मणिमाला.

सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च। ताम् अध्यात्म ज्ञान पदव्या गमनीयां.

काली अम्बाम् अम्बु कहा क्षीम् अहम् ईहे।।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च। विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिवपत्नीं

लक्ष्मी अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।। पूजा काले भाव विशृद्धिं विदधानो, भक्तया नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।

वाचां सिद्धि सम्पत्तिम् उच्चैः शिवभित्तं, तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदघाति।।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् ईडे।।

माता पर फुलों का छत्र चढावे श्री ज्वाला भगवतयै छत्रं परिकल्पयामि नमः। माता को आईना (Mirror) दिखाते हुए पढे। श्री ज्वाला भगवतयै आदर्शं परिकल्पयामि नमः। थोड़ा पानी किसी (निर्माल्य पात्र) में छोड़ते हुए पढ़े। श्री ज्वाला भगवतयै पूजन निमते धूप दीपात् सड़कल्प सिद्धिरस्त् धूपो नमः दीपो नमः

साफ पानी निर्माल्य पात्र में छोड़ते हुए पढ़े श्री ज्वाला भगवतयै वासो नमः

भगवती को मन से आधा प्रक्रम करें तथा माफी माँगे। अन्तं नमः अन्तं नमः आज्यम आज्यम अन्तम अद्य दिने अद्य यथा उ सड़कल्पात सिद्धिर अस्तु अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं :

यदगतं तत् र्सवम अछिद्रं सम्पूर्णम् अस्त हाथ में पानी रख कर पदे।

श्री ज्वाला भगवतयै आचमनीयं नमः माता के सामने दक्षिणा रखें व पढे।

एता भगवतयै सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तुः।

(तत नैवेध्य) अब नैवेध्य लाये।

नैवेद्य की थाली को छुकर मन्त्र पढें

अमृतेष्पुद्रया अमृतीकश्त्य। अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्रणि सवात्रिस्य देवस्य त्वासवितुः हस्ताभ्यामादघे । श्री महागणपत्यादि कलश मण्डल देवताभ्य, वासुदेवादिभ्यः विष्णु पंचायतन देवताभ्यं। अभ्यङ.करी देव्यै क्षेमङ.करी भवान्यैः सर्वशत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये रुद्रराज भैरवाय (only in Jammu Recite the name of the Bhairav of your area.) पञच चत्वारिश्द्धवास्तोषपति याग देवातायः, इंद्रयादिभ्याः दशलोकपालेभ्यः, आदित्यादिभ्यो, एकादश ग्रहस्याः, महागायत्रे, सावित्रे, सरस्वतयै, हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्योः ऊँ तत्सद बह्मा अधतावत तिथो। असषाढ, शुक्ल.. पक्षस्य चर्तुदयशायाDay..... वासरायां श्री ज्वाला भगवतयै (ईष्टदेवि) संताषणार्थं श्री ज्वाला पूजन निमिते जों नमो नेवेध नेवेदयामि।

चदू का (जो हम छत पर मातृकाओं के लिए बाहर रखते हैं) छूते हुए पढें। या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या, घौरतरा परा, खेचरी, भूचरी, रमा तृष्टा भवन्त् में सदा, आकाशं मातुभ्यः, अन्नं नमः अर्धो नमः पृष्यं नमः (चट् को तिलक व अर्घ-फूल लगायें)

मगवती के लिए एक छोटी थाली में नैवेघ रखें। श्री ज्वाला भगवतयै नैवेद्यं नेवेदयामि नमः

थोड़ा मोग अलग से क्षंत्रपालों के हेतु रखे व पढ़ें।

यो अस्मिन निवासित क्षेत्र क्षेत्रपालः संकिकरः तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय संययुत्तम्।। क्षां क्षेत्राधि पतये अन्नं नमः।

रां राष्ट्राधि पतये अन्नं नमः।

सर्वाभयं वरप्रद मयिपुष्टि पुष्टपति दधातु। माता के विग्रह (फोटो) पर ज्ञमा पुष्प अर्पण करते हुए पढें।

ऊँ ज्वालापर्वत संस्थितां त्रिनयनां पीठ त्रया अधिष्ठिता ज्वालाम्बर भृषितां सुवदनां नित्यामद्वश्यां जनेः षट् चक्राम्बुजमध्यगां वर गदाम्भोजाम्यान्बिभ्रतीं चिद्रूपां सकलार्थ दीपनकरी ज्वालामुखी नौम्यहम् ऊँ जाज्वल्यमान वपुषा दश दिग्विभागान्सन्दीपयन्तयभय पध्म गदा वराढया। सिंह स्थिता शशिकला भरणा त्रिनेत्रा ज्वालामुखी हरंतु मोहतमः सदा नः।। आब्रह्म कीट जननीं महिषीं शिवस्य मुगधिसमतां प्रलयकोटि रवि प्रकाशाम्। ज्वालामुखीं कनक कुण्डल शोभितांसां वन्दे पुनः पुनर पीह सहस्र कृत्वः।। देदीप्यमान मुकुट द्युतिमिश्च देवैर्दासीरिव द्विगुणितांघ्रि नखप्रदीप्तिम्। ज्वालामुखीं सकल मडगलमडगलां तामम्बां नतोडस्म्यखिल दुःख विपत्ति दग्धीम।।

क्षित्यब्हुताशपवनाम्बर सूर्य चन्द्रयष्ट्राख्य मूर्तिममलानपि पावयन्तीम्। ज्वालामुखीं प्रणतकल्पलतां शिवस्य साम्राज्य शक्तिम् अतुलां महतीं नमामि।। नौमीश्वरीं त्रिजगतोङम्यदानशौण्डां ज्वालामहार्य भवजालहरां नमामि।

मोहान्धकार हरणे विमलेन्द्रकान्ति देवीं सदा भगवती मनसा स्मरामि।। दुर्फम वायुभिरितस्तत एव दीप्तैः पापज्वलज्जवलनजात शिखाकलापैः। दग्धं च जीवयत् मां परितो लुठन्तं देवी दर्याद्र हृदया अमृत पूर्ण दृष्टया।। ज्वालामुखी ज्वलदनल्पलयाग्नि कोटिरोचिष्मती रविशशि प्रति भान कर्त्री। भक्तस्य भर्गवपृषा भवभर्जनाय भूयात्सदाभ्युदय दान वदान्यमुख्या।। त्वं चौषधीश मुकुटाडहमसाध्य रोगः त्वं चित्प्रदीप्तिरहमत्र भवांध्यमग्नः। त्वं च अम्ब ! कल्पतरूरेव अहं च भिक्षुः ज्वालामुखि प्रकुरू देवि यथोचितं मे।। यद ध्यान केसरिसमा क्रमणोत्थमीतेः मर्म व्यथा जनकदःख शतानि सघ्यः। गोमायवन्ति परितो भश्शकान्दि शीकानस्मांश्च पालयतु सैव भवाब्यिद्:खात्।। ज्वालामुखि क्षणमपीह विलम्बमम्ब नार्तो ह्यनर्थ पतितः सहते विपन्नः। हस्तस्थिता अमृतकमण्डल् वारिणैव मां मुच्छितं झटिति जीवयं तापतप्तम।। बाह्यान्ध्यनाशन विधौ रविचन्द्र वहिन ज्योतीषि देवि दययाङजनयः परा त्वम। तवत्तु रूपम् अखिला अन्तर मोह रात्रिध्त्रान्ता अन्तकारि तव यत्स्फ्रतादतो अन्तः।। मन्ये त्रिधाम नयने नयन त्रयं ते भक्तार्ति नाशन निमित्त विलोकनाय। मातः परं यदिप देवि तथाप्य धन्यः त्वदिष्टपात रहितोसम्यहहा हतोधस्म।। सत्यं ब्रवीमि श्रुण् चित मदान्ध मूर्ख मागाः कदापि विषयान्विषमा अन्विषाक्तान। ईशीम पार करूणां भवभीति भेत्रीम् अम्बां भजस्व सततं पर सौख्य दात्रीम्।। त्वं मे महेशि जननी परमार्ति हर्त्री त्वं मे पिता हिततमः त्वमहेतु बंधुः। त्वं में भवाब्धितरणे दृढनौः त्वमेव दुःखामयाधि हरणे चतुरश्च वैद्यः।। ज्वालां जगत् जनन संहरण स्थितीनां हेतं गतिं मुषित लज्जित दःखितानाम। उन्मोचनां च भवबंर्धन दुर्गतीनां त्वां नौमि नौमि शरणं शरणागता नाम।। ज्वालामुखी स्तविममं श्रश्ण्यात् पठेतवा यः श्रद्धया परमया बहभक्ति यक्तः। भ्यात्स दग्ध बह् जन्म शतर्जिता अथो अविज्ञो प्यनेक जननाथित राज्य भूमिः।।

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थास् सर्वदा भगवती त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् इत्यादि क्षमापुष्पाणि दत्वा उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा च उरसा मनसा च नमस्कार करोमि नम

Jyotishachyara & Karam Kand Shiromani Sh. Kashi Nath Handoo (Shiv Nagar)

आद्रगात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति। विद्योतपोथ्यां भूतात्मा बुद्धिर्जानेन शुद्धयति।।

The body is cleaned by water, the internal organ is freshfied by truthfulness, the individual soul by sacred learning and austerities, the intellect by (true) knowledge.

- Manu

MATA JAWALA JI.....



कें उद्यच्चन्द्र मरीचि सिन्तममुखीम् एकादशारणां, पाशाम्मोजवरामयां कर तलैः संबिम्नतीमादरात्। अग्निन्द्वर्क विलोचनां शशिकलाचूडां त्रिवर्गोज्जवलां, प्रेतस्थां ज्वलदग्निमण्डल शिखां ज्वालामुखीं नौम्यहम्।।

The peeth of Jawala Ji is situated at 20Km from Srinagar.

There are three routes to reach here. One from Ladhu, one from Balhama one lastly from Khanmoh.

The thirth of Mother Jawala is surrounded by historical mountain range known as "Vastr Van" is a place known as "Khrew". At "Khrew" there is a beautiful spring known as "Aneek Nae".

Mata Kali represents Moon, Mata Lalita represents Sun, but Mata Jawalamukhi represents Fire.

The religious historical documents and the oral traditions of Kashmir tells us that once two demons "Chand" & "Mund" managed to steal away the "Sampadha" (Luxuries) of Devatas. In Sanskrit Literature the "Treasure" or "Sampadha" is known as क्षंन (equal to 10 Arab). This word क्षंन became the Khrew in the course of time. The two demons after stealing the treasure the Lord Kubera (the treasurer of Devas) hid the treasure in a cave situated at the north direction of this "Vastr Van". The hillock around Jawala Ji.

Devas felt very perturbed and they started propitiating the Lord Shiva who after the great penance of Devas got pleased and requested the great energy in the form of "flames" to help the Devas in the distress.

The mother in the form of Shri Jawala Mukhi the (Cosmic fire) bestowed the desired desires of Devas by killing these demons and returning back the wealth to Devas.

After this Mother Jawala made the top of this hill as her permanent abode and is residing there in the shape of a rock.

Later all the divine forces too cave to reside at this hilllock to get the grace of Mother Jawala Ji. This rock shaped mother is in a levitating position and does not touch the ground.

"I mediate in my heart on that beautiful Jewel throne of bindu and nand, the circle of consciousness, in that cavity where a bright lightning like colour competes with the effulgence of a pale red gem" (Matrikabeda Tantra)

The seed mantra of yantra of Jawalamukhi is Om Hrim Shrim Jawalamukhi Mama Sarvashaatrun Bhakshaya Bhakshaya Hum Phat Svaha.

The yantra is a hex angle consisting of interlacing triangles. In the central triangle and bindu is the great temple of Jawalamukhi. The upper triangle is the Sundari temple and lower one is Kalika temple. Then there is a circle and eight petals, then 16 petals and three circles and earth square.

These16 petals represent 16 Jawals (flames) in anticlock wise direction.

- (1) Varuni (2) Vatyali (3) Varahi (4) Kulasundari(5) Kuvari (6) Kulika (7) Kunthi (8) Kutsita (9) Kutila
- (10) Kuhu (11) Kunti (12) Kumbeshvari
 - (13) Kunti (14) Kuchari (15)Kriti (16) Kriti
 - The eight petals represent 8 maidens
 (1) Maya (2) Mohini (3) Bala
 - (4) Bhagarupini(5) Bhagavasa (6) Bhirunda
 - (7) Mridani (8) Baindeveshvari The 10 petals represent the happiness of Mothe
- Jawala Ji. They are worshiped anti-clock wise
 (1) Brahmi (2) Shanbhavi (3) Durga
 - (4) Varahi (5) Kulakamini(6) Narasimhi (7) Kavmari (8) Matangi (9) Bhadra
 - (10) Ugratara (8) Matangi (9) Bhadra

Mother Jawalamukchi resides in the centre with he attendants Jawalini, Jatini, Jata & Jalandhari.

Every year of the bright 14th day of Ashad Jawal chaturdashi People worship of gracious mother is believe that the apparently 6ft high looking black stone rock is th manifestation of the Jawala which has turned the rock black

Some people have observed flames coming out from the base of this rock and consuming the Prasad (神) whic is placed in front as offerings.

The Yatries & Bhaktas take a bath in this holy sprin of "Aneek" and then proceed for the darshan of the Mothe Jawala. The "Aneek" spring has two parts one for men å another for the women folk. There is long series of stair made up of rocks to reach the main "peeth". The total number of steps are around 365.

It is said that this stair and the temple of Mata wa constructed by one ardent devotee of Mata whose name wa Dr. Bal Krishen Ji.

The temple is having octagonal shape and near about 12 landings.

We are thankful to Sh. Maharaj Krishen Rain President Sh. Jawala Ji Samiti, Khrew for providing th vital information and historical data regarding the Jawal Peeth.

-Garge

GLOBAL WORKSHOP ON

Samuhik International Indrakshi Recitation Jap

It has been observed that 11th July, 2008

आषाढ़, शुक्ल पक्ष नवमी (हार नवम्) सांय काल 7.30 p.m. is a special nakshatra & pradush for pleasing gods and godesses. Mata Mahamaya Durga Bhagwati is supposed to be in her serene and very happy mood on this Nakshtra and pradush. Reciting indrakshi Maha Mantra 10 times (dasham) collectively with free mind whatever place, poster & position shall please Mahamaya Durga Bhagwati. A collective jap of this sort has great strength, spiritural value and sanctity.

This jap will help us and the whole world to cradicate our miseries, diseases fears, disappointments, displeasure, discontentments and disbeliefes casued by insurgency, termoil, exodous, disunion and dislocation. In order to please the godess please invest these few minutes for the betterment of the community and world in general to obtain lot of cosmic energy from Mahamaya. For futher information. visit us at w.w.w.satissarog, or email to satissar 2000/@yaho, com.

For the inforamtion of the brave youth of the community (our future community!)

Dear Sanginic enthusiasts Youth of the Community, Satisar foundation has a dream of seeing this hapless K.P. Community and its youth, happy propsous and full of spiritual moral and ethical values. It seems that the marriages taking place out side the community (Intermarriages) have posed a threat and the matter has become of concern for many of us especially elder generation. Its implications are multidimensional. We propose to have an international debate on the same. Laavuy buad guy. (Young minds are always sharp). They have to write in favour of or against the intermarriages. Intermarriage mean marriage outside the Kashmiri Pandits Community and not within it anyway. Age group: 16 to 24 years, not more than 1500 words.

send it to: Incharge social division Satisar foundation P. Box No. 118, H. P. O. Jammu, J&K or E-mail: it to satisar2000@yahoo.com. on or before 15th of August. Each for & against best selected essays will be published and the writers will be made to participate in the Debate were they will be Suitably awarded.



IN ORDER TO ENABLE US TO FULFIL OUR COMMITMENT TO SEE PROJECTS THROUGH, WE APPEAL OUR GENEROUS COMMUNITY MEMBERS INDIVIDUALLY AND COLLECTIVELY TO COME FORWARD TO FINANCE A PART OR WHOLE OF ANY OF THE PROJECTS. WE ALSO LOOK FORWARD TO. SMALL CONTRIBUTIONS FROM OUR PATTONS TO KEEP THE FLAME OF "SATISAR" ALWAYS KINDED. ANY RELIGIOUS LITERATURE WHICH YOU THINK SHOULD REACH THE COMMUNITY MEMBERS MAY BE SENT TO RESEARCH DIVISION OF FOUNDATION FOR PUBLICATION.

FOR DETAILS CONTACT OUR EDITORIAL BOARD CELL NUMBERS FOR ANY CONTRIBUTION/ASSISTANCE.

Social Code

1. PRESERVE AND PROMOTE OUR LANGUAGE

- By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn, speak and interact in Kashmiri.
- By interacting and speaking with out fellow community brethren in Kashmiri.

PROTECT OUR IDENTITY

- By imbibing a sense of pride in our unique social, cultural and spiritual tradition.
- By maintaining our age-old social marital order and promoting and encouraging marriages within the fold.

UPHOLD OUR TRADITIONS:

- By following the indigenous scientific Lunar calender in observing rituals, festivals, special occasions etc.
- By celebrating birthday's, rituals, religious occasions and unique Kashmiri Pandit festivals.

STRENGTHEN OUR BROTHERHOOD

- By expanding our social circle and
- By caring for each other; Mutual care is the only ray of hope for our Survival in Exile.

STRENGTHEN SOCIO-CULTURAL INSTITUTIONS

Physically, intellectually and financially, as these are the pillars of our Identity.



द्वज्ञ सुपर्णा सयुजा सखाया, स्मानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वरद्वत्य, नश्नन्नयो अभिचाकशीति।।

Two birds; living together and friendly to each other reside on one and the same tree; out of the two one eats the fruits (The result of past deeds) with great relish, the other one, not eating; merely looks on (Manduka,

Kindly make us understand this riddle - Satisar

Hony. Editor...... Virender Wangnoo (9419192733) Sub-Editor Satish Munshi (9419195317) DTP & Setting Ajay Wuthoo (9419124626) Published by Sh. S.L. Tickoo (Chairman)

Printed at

Main Chowk, Janipur, Jammu 9419131650, 9906256577

SATISAR FOUNDATION

Post Box No. 118, Head Post Office (Jammu) J&K Call : 9419113414, 9419623511, 0191-2593948 e-mail : Sas at wow Satisar ord

0191-2555077